Central University of Haryana

NAAC Accredited 'A' Grade University

Public Relations Office

Biofertilizer developed by CUH

Newspaper: Amar Ujala **Date: 17-12-2022**

कृषि

कुलपति ने खेतों में पहुंचकर किया परीक्षण

फसलों के लिए वरदान साबित होगा विवि में तैयार किया जैव उर्वरक

संवाद न्यूज एजेंसी

महेंद्रगढ़। हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हकेंविवि) के शोधार्थियों, शिक्षकों की टीम ने एक ऐसा जैव उर्वरक तैयार किया है जोकि फसलों के लिए वरदान साबित हो रहा है। इस उर्वरक के उपयोग से फसलों में प्रयोग होने वाले फर्टिलाइजर की मांग की आवश्यकता को कम करने में मदद मिल रही है। विश्वविद्यालय के गोद लिए गावं मालड़ा में इस जैव उर्वरक का सफल परीक्षण किया गया।

इससे आए परिणामों के अवलोकन हेतु विश्वविद्यालय कुलपति प्रो. टंकेश्वर कुमार ने शिक्षकों, विद्यार्थियों, शोधार्थियों के साथ मालड़ा का दौरा किया। कुलपति ने इस तकनीक के परिणामों पर हर्ष व्यक्त करते हुए कहा कि अवश्य ही इस प्रयास का लाभ ग्रामीणों को प्राप्त होगा और

हकेंविवि द्वारा विकसित जैव उर्वरक तकनीक का निरीक्षण करते कुलपति प्रो. टंकेश्वर कुमार। संवाद

विश्वविद्यालय के सूक्ष्म जीवविज्ञान विभाग के इस प्रयास के माध्यम से आत्मनिर्भर भारत की परिकल्पना को साकार करते हुए प्राकृतिक खेती को बढ़ावा मिलेगा। विश्वविद्यालय में इस परियोजना के प्रमुख प्रो. सुरेंद्र सिंह ने बताया कि उनकी टीम स्थानीय कृषकों के सहयोग से इस प्रयास में बीते तीन सालों से कार्य कर रहे हैं। इस तकनीक के अंतर्गत नए सीजन में और अधिक कृषकों को जैव उर्वरक उपलब्ध कराए जाएंगे। उन्होंने कहा कि इस तकनीक के अंतर्गत पोटाशियम और फासफोरस के संतुलन को स्थापित कर फसल उपयोगी बनाने में मदद मिली है और जिसके परिणाम स्वरूप 40 से 50 प्रतिशत कम रासायनिक खाद (डीएपी) का प्रयोग करके 5 से 10 प्रतिशत तक उपज में वृद्धि दर्ज की जा सकती है। शैक्षणिक अधिष्ठाता प्रो. दिनेश कुमार ने बताया कि स्थानीय किसानों की कृषि वर्षा की कमी के चलते निरंतर प्रभावित होती है। ऐसे में जैव उर्वरकों की मदद से उत्पादकता को बढ़ाने में सहयोग मिलेगा। विश्वविद्यालय कुलपति के साथ मालड़ा गांव के दौरे पर प्रो. प्रमोद कुमार, प्रो. पवन कुमार मौर्य, डॉ. मोना शर्मा, उन्नत भारत अभियान के नोडल अधिकारी प्रो. विकास बेनीवाल सहित इस परियोजना के जुड़ें सूक्ष्म जीवविज्ञान विभाग के विद्यार्थी व शोधार्थी स्थानीय ग्रामीणों के साथ उपस्थित रहे।

Central University of Haryana

NAAC Accredited 'A' Grade University

Public Relations Office

Newspaper: Dainik Bhaskar **Date: 17-12-2022**

उन्नत भारत अभियान के तहत जैव उर्वरक की तकनीक विकसित की, फसलों के लिए वरदान

भास्कर न्यूज | महेंद्रगढ़

▪ आत्मनिर्भर भारत की परिकल्पना को साकार करते हुए प्राकृतिक खेती को बढ़ावा मिलेगा : प्रो. टंकेश्वर

हकेवि के शोधार्थियों व शिक्षकों की टीम ने एक ऐसा जैव उर्वरक तैयार किया है जो कि फसलों के लिए वरदान साबित हो रहा है। इस उर्वरक के उपयोग से फसलों में प्रयोग होने वाले फर्टिलाइजर की मांग की आवश्यकता को कम करने में मदद मिल रही है। विश्वविद्यालय के गोद लिए गांव मालड़ा में इस जैव उर्वरक का सफल परीक्षण किया गया। इससे आए परिणामों के अवलोकन हेतु विश्वविद्यालय कुलपति प्रो. टंकेश्वर कुमार ने शिक्षकों, विद्यार्थियों व शोधार्थियों के साथ मालड़ा का दौरा किया। कुलपति ने इस तकनीक के परिणामों पर हर्ष व्यक्त करते हुए कहा कि अवश्य ही इस प्रयास का लाभ ग्रामीणों को प्राप्त होगा और विश्वविद्यालय के सूक्ष्म जीवविज्ञान विभाग के इस प्रयास के माध्यम से आत्मनिर्भर भारत की परिकल्पना को साकार करते हुए प्राकृतिक खेती को बढ़ावा मिलेगा।

विश्वविद्यालय में इस परियोजना के प्रमुख प्रो. सुरेंद्र सिंह ने बताया कि उनकी टीम स्थानीय कृषकों के सहयोग से इस प्रयास में बीते तीन सालों से कार्य कर रहे हैं। इस तकनीक के अंतर्गत नए सीजन में और अधिक कृषकों को जैव उर्वरक उपलब्ध कराए जाएंगे। इस तकनीक के अंतर्गत पोटाशियम और फॉस्फोरस के संतुलन को स्थापित कर फसल उपयोगी बनाने में मदद मिली है। जिसके परिणाम स्वरूप 40 से 50 प्रतिशत कम रासायनिक खाद (डीएपी) का प्रयोग करके 5 से 10 प्रतिशत तक उपज में वृद्धि दर्ज की जा सकती है।

विश्वविद्यालय के शैक्षणिक अधिष्ठाता प्रो. दिनेश कुमार ने बताया कि स्थानीय किसानों की कृषि वर्षा की कमी के चलते निरंतर प्रभावित होती है। ऐसे में जैव उर्वरकों की मदद से उत्पादकता को बढ़ाने में सहयोग मिलेगा। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय की टीम के द्वारा इस दिशा में किए गए प्रयास उल्लेखनीय परिणाम प्रदान कर रहे हैं और अवश्य ही इसका लाभ अन्य किसान भी उठाएंगे। विश्वविद्यालय कुलपति के साथ मालड़ा गांव के दौरे पर प्रो. प्रमोद कुमार, प्रो. पवन कुमार मौर्य, डॉ. मोना शर्मा, उन्नत भारत अभियान के नोडल ऑफिसर प्रो. विकास बेनीवाल सहित इस परियोजना के जुड़ें सूक्ष्म जीवविज्ञान विभाग के विद्यार्थी व शोधार्थी ग्रामीणों के साथ उपस्थित रहे।

Central University of Haryana

NAAC Accredited 'A' Grade University

Public Relations Office

Newspaper: Dainik Jagran **Date: 17-12-2022**

जैव उर्वरक से फसलों में होगी बढ़ोतरी

हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय में उन्नत भारत अभियान के तहत गांव मालड़ा में जैव उर्वरक तकनीक की गई विकसित

संवाद सहयोगी, महेंद्रगढ़: हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हकेंवि) के शोधार्थियों व शिक्षकों की टीम ने एक ऐसा जैव उर्वरक तैयार किया है, जोकि फसलों के लिए वरदान साबित होगा।

इस उर्वरक के उपयोग से फसलों में प्रयोग होने वाले फर्टिलाइजर की मांग की आवश्यकता को कम करने में मदद मिल रही है।

विश्वविद्यालय के गोद लिए गांव मालड़ा में इस जैव उर्वरक का सफल परीक्षण किया गया। इससे आए परिणामों के अवलोकन के लिए विश्वविद्यालय कुलपति प्रो. टंकेश्वर कुमार ने शिक्षकों, विद्यार्थियों व शोधार्थियों के साथ मालड़ा का दौरा किया। विश्वविद्यालय कुलपति प्रो. टंकेश्वर कुमार ने कहा कि अवश्य ही इस नई तकनीक का लाभ ग्रामीणों को प्राप्त होगा और विश्वविद्यालय के सूक्ष्म जीवविज्ञान विभाग के इस प्रयास के माध्यम से आत्मनिर्भर भारत की परिकल्पना को साकार करते हुए प्राकृतिक खेती को बढ़ावा मिलेगा। विश्वविद्यालय के शैक्षणिक अधिष्ठाता प्रो. दिनेश कुमार ने बताया कि स्थानीय किसानों की कृषि वर्षा की कमी के चलते निरंतर प्रभावित होती है। ऐसे में जैव उर्वरकों की मदद से उत्पादकता को बढ़ाने में सहयोग मिलेगा। विश्वविद्यालय की टीम द्वारा इस दिशा में किए गए प्रयास उल्लेखनीय परिणाम प्रदान कर रहे हैं और अवश्य ही इसका लाभ अन्य किसान भी उठाएंगे।

हकेंवि द्वारा विकसित जैव उर्वरक तकनीक का निरीक्षण करते कुलपति व अध्यापक ● हकेंवि

विश्वविद्यालय कुलपति के साथ मालड़ा गांव के दौरे पर प्रो. प्रमोद, डा. मोना शर्मा, उन्नत भारत अभियान के नोडल आफिसर प्रो. विकास बेनीवाल सहित इस परियोजना के जूड़े सूक्ष्म जीवविज्ञान विभाग के विद्यार्थी व शोधार्थी स्थानीय ग्रामीणों के साथ उपस्थित रहे। परियोजना के प्रमुख प्रो. सुरेंद्र सिंह ने बताया कि उनकी टीम स्थानीय कृषकों के सहयोग से इस प्रयास में बीते तीन सालों से कार्य कर रहे हैं।

इस तकनीक के अंतर्गत नए सीजन में और अधिक कृषकों को जैव उर्वरक उपलब्ध कराए जाएंगे। इस तकनीक के अंतर्गत पोटाशियम और फासफोरस के संतुलन को स्थापित कर फसल उपयोगी बनाने में मदद मिली है। इससे रासायनिक खाद (डीएपी) का 40 से 50 प्रतिशत कम प्रयोग करके पांच से 10 प्रतिशत तक उपज में वृद्धि दर्ज की जा सकती है।

Central University of Haryana

NAAC Accredited 'A' Grade University

Public Relations Office

Newspaper: Haribhoomi **Date: 17-12-2022**

महेंद्रगढ़। विकसित जैव उर्वरक तकनीक का निरीक्षण करते कुलपति।

हरियाणा केंद्रीय विवि का जैव उर्वरक फसलों के लिए वरदान

■ उन्नत भारत अभियान के तहत जैव उर्वरक तकनीक की विकसित

महेंद्रगढ़। हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय के शोधार्थियों व शिक्षकों की टीम ने एक ऐसा जैव उर्वरक तैयार किया है जो कि फसलों के लिए वरदान साबित हो रहा है।

इस उर्वरक के उपयोग से फसलों में प्रयोग होने वाले फर्टिलाइजर की मांग की आवश्यकता को कम करने में मदद मिल रही है। विवि के गोद लिए गांव मालड़ा में इस जैव उर्वरक का सफल परीक्षण किया गया। इससे आए परिणामों के अवलोकन हेतु विश्वविद्यालय कुलपति प्रो. टंकेश्वर कुमार ने शिक्षकों, विद्यार्थियों व शोधार्थियों के साथ मालड़ा का दौरा किया। कुलपति ने इस तकनीक के परिणामों पर हर्ष व्यक्त करते हुए कहा कि अवश्य ही इस प्रयास का लाभ ग्रामीणों को प्राप्त होगा और विश्वविद्यालय के सूक्ष्म जीवविज्ञान विभाग के इस प्रयास के माध्यम से आत्मनिर्भर भारत की परिकल्पना को साकार करते हुए प्राकृतिक खेती को बढ़ावा मिलेगा।

Central University of Haryana

NAAC Accredited 'A' Grade University

Public Relations Office

Newspaper: Punjab Kesari **Date: 17-12-2022**

जैव उर्वरक फसलों के लिए वरदान

महेंद्रगढ़, 16 दिसम्बर (स.ह., मोहन): हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय, महेंद्रगढ़ के शोधार्थियों व शिक्षकों की टीम ने एक ऐसा जैव उर्वरक तैयार किया है जो कि फसलों के लिए वरदान साबित हो रहा है। इस उर्वरक के उपयोग से फसलों में प्रयोग होने वाले फर्टिलाइजर की मांग की आवश्यकता को कम करने में मदद मिल रही है।

हकेंवि द्वारा विकसित जैव उर्वरक तकनीक का निरीक्षण करते कुलपति प्रो. टंकेश्वर कुमार।

विश्वविद्यालय के गोद लिए गावं मालड़ा में इस जैव उर्वरक का सफल परीक्षण किया गया। इससे आए परिणामों के अवलोकन हेतु विश्वविद्यालय कुलपति प्रो. टंकश्वर कुमार ने शिक्षकों, विद्यार्थियों व शोधार्थियों के साथ मालड़ा का दौरा किया।

कुलपति ने इस तकनीक के परिणामों पर हर्ष व्यक्त करते हुए कहा कि अवश्य ही इस प्रयास का लाभ ग्रामीणों को प्राप्त होगा और विश्वविद्यालय के सूक्ष्म जीवविज्ञान विभाग के इस प्रयास के माध्यम से आत्मनिर्भर भारत की परिकल्पना को साकार करते हुए प्राकृतिक खेती को बढ़ावा मिलेगा।

विश्वविद्यालय में इस परियोजना के प्रमुख प्रो. सुरेंद्र सिंह ने बताया कि उनकी टीम स्थानीय कृषकों के सहयोग से इस प्रयास में बीते 3 सालों से कार्य कर रही है। इस तकनीक के अंतर्गत नए सीजन में और अधिक कृषकों को जैव उर्वरक उपलब्ध करवाए जाएंगे।

इस तकनीक के अंतर्गत पोटाशियम और फासफोरस के संतुलन को स्थापित कर फसल उपयोगी बनाने में मदद मिली है और जिसके परिणाम स्वरूप 40 से 50 प्रतिशत कम रासायनिक खाद (डी.ए.पी.) का प्रयोग करके 5 से 10 प्रतिशत तक उपज में वृद्धि दर्ज की जा सकती है।

विश्वविद्यालय कुलपति के साथ मालड़ा गांव के दौरे पर प्रो. प्रमोद कुमार, प्रो. पवन कुमार मौर्य, डॉ. मोना शर्मा, उन्नत भारत अभियान के नोडल ऑफिसर प्रो. विकास बेनीवाल सहित इस परियोजना के जुड़े सूक्ष्म जीवविज्ञान विभाग के विद्यार्थी व शोधार्थी स्थानीय ग्रामीणों के साथ उपस्थित रहे।